संवाद दर्शन

सहयोग राशि-5/-

विक्रम संवत : 2083 | वर्ष : 2026

हिन्दी पाक्षिक

अंक : अगस्त (द्वितीय)

सौर फसल ड्रायर – फसल बचाने से किसान की आमदनी बढ़ाने तक

भारत जैसे कृषि प्रधान देश में कटाई के बाद फसलों का खराब होना किसानों के लिए बड़ी चुनौती है। फल, सब्जियां, मसाले और अन्य कृषि उत्पादों में नमी अधिक होने के कारण फफूंद और सूक्ष्म जीवों का प्रकोप तेजी से होता है। ऐसे में सौर फसल ड्रायर (Solar Crop Dryer) कृषि उपज को सुरक्षित रखने, उसकी गुणवत्ता बनाए रखने और किसानों की आय बढ़ाने की उपयोगी तकनीक बनकर उभर रहा है।

सौर फसल ड्रायर सूर्य की ऊर्जा का उपयोग करके कृषि उत्पादों से अतिरिक्त नमी निकालता है। खुले में धूप में सुखाने की पारंपरिक व्यवस्था के विपरीत इसमें उत्पाद धूल, बारिश, कीड़े, पक्षियों और अन्य प्रदूषकों के सीधे संपर्क में नहीं आते। परिणामस्वरूप उत्पाद की स्वच्छता, रंग, स्वाद और पोषण संबंधी गुणवत्ता बेहतर बनी रहती है।

सौर ड्रायर मुख्य रूप से प्रत्यक्ष, अप्रत्यक्ष, मिश्रित–मोड और हाइब्रिड प्रकार के होते हैं। प्रत्यक्ष ड्रायर में कृषि उत्पाद पारदर्शी आवरण के भीतर सूर्य की किरणों से सीधे गर्म होते हैं। अप्रत्यक्ष ड्रायर में अलग सोलर कलेक्टर सूर्य की गर्मी को अवशोषित करता है और गर्म हवा को सुखाने वाले कक्ष तक पहुंचाया जाता है। वहीं सक्रिय या जबरन संवहन वाले ड्रायर में पंखे की सहायता से गर्म हवा का प्रवाह नियंत्रित किया जाता है। कई आधुनिक प्रणालियों में पंखे को सौर फोटोवोल्टिक पैनल से चलाया जाता है, जिससे बिजली या जीवाश्म ईंधन पर निर्भरता कम होती है।

खुले में सुखाने की प्रक्रिया कई समस्याओं से प्रभावित होती है। अचानक बारिश होने पर उत्पाद दोबारा नमी सोख सकता है। अत्यधिक तापमान में सीधे सूर्य के संपर्क से बाहरी सतह कठोर हो जाने की समस्या यानी 'केस हार्डनिंग' भी हो सकती है, जिससे अंदर की नमी फंस जाती है। इसके अलावा धूल, कीट और पक्षियों से होने वाला प्रदूषण उत्पाद की गुणवत्ता को प्रभावित करता है। वैज्ञानिक तरीके से डिजाइन किए गए सौर ड्रायर इन समस्याओं को काफी हद तक कम कर सकते हैं।

सुखाने से उत्पाद की शेल्फ लाइफ बढ़ती है और उसका वजन तथा आयतन कम होने के कारण भंडारण और परिवहन की लागत भी घट सकती है। किसान अतिरिक्त उत्पादन को तुरंत कम कीमत पर बेचने के बजाय सुखाकर बाद में बाजार में उतार सकते हैं। इससे उन्हें बेहतर मूल्य प्राप्त करने और कटाई के बाद होने वाले नुकसान को कम करने का अवसर मिलता है।

बिहार जैसे कृषि प्रधान राज्य में सौर ड्रायर की उपयोगिता और बढ़ जाती है। फल, सब्जियां, मखाना, मसाले, औषधीय पौधे तथा विभिन्न स्थानीय कृषि उत्पादों को सुखाकर मूल्यवर्धित उत्पादों में बदला जा सकता है। इससे छोटे किसानों, स्वयं सहायता समूहों और ग्रामीण उद्यमियों के लिए प्रसंस्करण आधारित रोजगार के नए अवसर पैदा हो सकते हैं।

इस प्रकार सौर फसल ड्रायर केवल कृषि उपज सुखाने का उपकरण नहीं, बल्कि कटाई के बाद होने वाले नुकसान को कम करने, ऊर्जा की बचत करने, ग्रामीण उद्यमिता को बढ़ावा देने और किसानों की आय में वृद्धि करने वाली टिकाऊ तकनीक है। आने वाले समय में सौर ऊर्जा आधारित ऐसी तकनीकों का प्रसार कृषि को अधिक लाभकारी और पर्यावरण–अनुकूल बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

सरकारी सब्सिडी – बिहार राज्य के किसानों की आय बढ़ाने और फसल बर्बादी रोकने के लिए बिहार सरकार सोलर क्रॉप ड्रायर पर 1.40 लाख रुपये तक की सब्सिडी (अनुदान) दे रही है। इच्छुक किसान उद्यान निदेशालय के आधिकारिक horticulture.bihar.gov.in पोर्टल पर जाकर ऑनलाइन आवेदन कर सकते हैं

संवाद दर्शन
हिन्दी पाक्षिक

सलाहकार संपादक
देवेन्द्र मिश्र

संपादक
संजीव कुमार

प्रकाशक एवं मुद्रक
बिमल कुमार जैन

प्रिंटर्स
लोकवाणी प्रिंटिंग प्रेस,
शशि काम्प्लेक्स,
नाला रोड, कदमकुआँ
पटना

पता
विश्व संवाद केंद्र
104-105, सूर्या अपार्टमेंट,
फ्रेजर रोड, पटना - 800 001
संपर्क = 0612 2216048

ई-मेल- vskpatna@gmail.com
vskbihar@gmail.com
वेबसाइट- www.vskbihar.com

सुभाषित

यस्य नास्ति स्वयं प्रज्ञा शास्त्रं तस्य करोति किम्।
लोचनाभ्यां विहीनस्य दर्पणः किं करिष्यति॥

अर्थः जिसके पास खुद की बुद्धि नहीं किताबें भी उसके किस काम की? जिसकी आंखें ही नहीं हैं वो आईने का क्या करेगा?

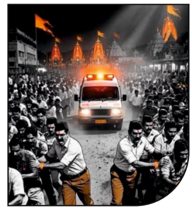

अनुक्रमणिका

बोध कथा 02
आमुख 03
बिहार में संघ 06
हमारे गौरव 08
अपनी हिन्दी 10
स्वास्थ्य 15

पाठकों के नाम पत्र

प्रिय पाठक,
सादर नमस्कार।

आशा है आप स्वस्थ एवं सानंद होंगे। अक्सर यह देखा जा रहा है कि अपने पवित्र हिंदू धर्म, हिंदू समाज और हिंदू संस्कृति के बारे में अपूर्ण तथ्यों के आधार पर भ्रमपूर्ण बातें की जाती है। हमलोग उसके प्रत्युत्तर में एक कॉलम शुरू करना चाह रहे हैं। आपके सुझाव सादर आमंत्रित हैं।

शेष शुभ!
सम्पादक

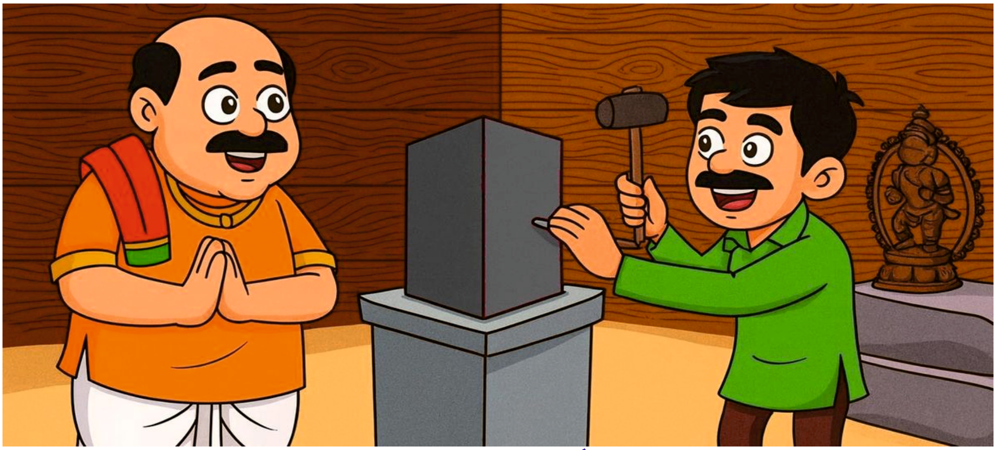

एक कदम और

एक बारह साल का लड़का अपने गाँव के स्कूल में पढ़ने जाता था। छोटू के स्कूल का रास्ता एक पहाड़ी से होकर गुजरता था, जो पत्थरों और कंकड़ों से अटा पड़ा था। बारिश के दिनों में यह रास्ता कीचड़ और पानी से लबालब हो जाता, जिससे बच्चों का स्कूल जाना मुश्किल हो जाता। छोटू को यह रास्ता हमेशा परेशान करता, लेकिन वह हर दिन हिम्मत जुटाकर स्कूल पहुँचता।

एक सुबह, स्कूल जाते वक्त छोटू ने देखा कि एक बूढ़ा आदमी पहाड़ी पर झुका हुआ पत्थरों को हटा रहा था। उसका चेहरा पसीने से तर था, लेकिन आँखों में एक अजीब–सी चमक थी। छोटू ने उत्सुकता से पूछा, ''बाबा, आप रोज़ सुबह–सुबह ये भारी पत्थर क्यों हटाते हैं? इससे क्या फर्क पड़ेगा? ये तो बस कुछ पत्थर हैं।''

बूढ़े आदमी ने अपनी कमर सीधी की और मुस्कुराते हुए कहा, ''छोटू, तूने कभी देखा है, जब बारिश होती है तो पानी इन्हीं पत्थरों की वजह से रुक जाता है? लोग फिसलते हैं, बच्चे गिरते हैं। अगर मैं रोज़ एक–दो पत्थर हटाऊँ, तो धीरे–धीरे रास्ता साफ हो जाएगा। पानी बिना रुके बहेगा, और सबके लिए रास्ता आसान हो जाएगा।''

छोटू को बाबा की बात समझ नहीं आई। उसने सोचा, ''इतने सारे पत्थर! एक बूढ़ा आदमी क्या कर लेगा?'' लेकिन बाबा की आँखों में विश्वास देखकर वह चुप रहा। उस दिन स्कूल जाते वक्त उसने एक छोटा–सा पत्थर उठाकर किनारे रख दिया। उसे लगा, शायद यह कोई मायने नहीं रखता, लेकिन बाबा की बात उसके दिमाग में घूमती रही।

अगले दिन, छोटू ने फिर बाबा को पत्थर हटाते देखा। इस बार उसने भी एक पत्थर उठाया और किनारे रख दिया। बाबा ने मुस्कुराकर उसकी पीठ थपथपाई। ''बस, एक और कदम, छोटू!'' उन्होंने कहा। छोटू को यह सुनकर अच्छा लगा। उसने फैसला किया कि वह हर दिन एक पत्थर हटाएगा।

दिन बीतते गए। छोटू ने देखा कि बाकी बच्चे भी उसका साथ देने लगे हैं। कोई पत्थर हटाता, कोई कूड़ा उठाता। धीरे–धीरे रास्ता साफ होने लगा। बारिश का पानी अब कम रुकता था। कुछ हफ्तों बाद, रास्ता इतना साफ हो गया कि बच्चे आसानी से स्कूल जा सकते थे।

एक दिन, बाबा ने छोटू को बुलाया और कहा, ''देखा, एक–एक कदम ने कितना बड़ा बदलाव ला दिया?'' छोटू मुस्कुराया। उसे समझ आ गया कि छोटे–छोटे प्रयास भी बड़े परिणाम ला सकते हैं।

सीख

छोटू और बाबा की कहानी सिखाती है कि कोई भी लक्ष्य कितना बड़ा क्यों न हो, रोज़ एक छोटा कदम उठाने से उसे हासिल किया जा सकता है। धैर्य और निरंतरता ही सफलता की कुंजी है।

बिहार के प्रमुख शिव मंदिर

- **अजगैबिनाथ मंदिर (सुल्तानगंज)**– गंगा नदी के बीचोंबीच एक चट्टान पर स्थित यह मंदिर पवित्र कांवड़ यात्रा के लिए पवित्र जल ले जाने वाले श्रद्धालुओं का आरंभिक स्थल है।
- **बाबा हरिहरनाथ मंदिर (सोनपुर)**– गंगा और गंडक नदियों के संगम पर स्थित यह प्राचीन मंदिर गजेंद्र मोक्ष की कथा से प्रसिद्ध है।
- **मां मुंडेश्वरी मंदिर (कैमूर)**– भगवान शिव और शक्ति दोनों को समर्पित एक पहाड़ी की चोटी पर स्थित यह अद्वितीय प्राचीन संरचना 108 ईस्वी पूर्व की है।
- **अशोक धाम / इंद्रदमनेश्वर महादेव (लखीसराय)**– एक विशाल स्वयंभू शिवलिंग के लिए प्रसिद्ध है।
- **बाबा ब्रह्मेश्वर नाथ मंदिर (बक्सर)**– पश्चिम की ओर मुख वाला एक दुर्लभ प्राचीन मंदिर, ऐसा माना जाता है कि शिवलिंग की स्थापना स्वयं भगवान ब्रह्मा ने की थी।
- **बाबा गरीब नाथ मंदिर (मुजफ्फरपुर)**– उत्तर बिहार के सबसे पुराने और सबसे अधिक भक्तोंवाले शिव मंदिरों में से एक, श्रावण माह में प्रत्येक सोमवार को यहाँ भारी भीड़ उमड़ती है।
- **सिंहेश्वर महादेव मंदिर (मधेपुरा)**– हिंदू पौराणिक कथाओं और पुराणों के इतिहास से गहराई से जुड़ा एक विशाल क्षेत्रीय तीर्थस्थल।
- **माधवेश्वर महादेव मंदिर (दरभंगा)**– इसका निर्माण महाराजा माधव सिंह ने 1806 ईस्वी में करवाया था। यह एक छोटा सफेद मंदिर है, जिस पर लाल रंग की छटाएँ हैं।

गयाजी क्षेत्र के प्रमुख शिव मंदिर

- **बाबा कोटेश्वरनाथ धाम (बेलागंज)**– मोरहार नदी के तट पर स्थित, यहाँ एक सदियों पुराना दुर्लभ 1,008 लघु सहस्रलिंग है।
- **प्रपितामहेश्वर मंदिर (गयाजी नगर)**– अग्नि पुराण में वर्णित एक प्राचीन काले बेसाल्ट का मंदिर, जो पूर्वजों के पिंडदान के दौरान साक्षी देवता के रूप में कार्य करता है।
- **रामशिला शिव मंदिर(गयाजी)**– एक अद्वितीय शीतलता प्रदान करने वाले स्फटिक शिवलिंग के लिए प्रसिद्ध।

- **कोंचेश्वर महादेव मंदिर (कोंच)**– बृहद शिव पुराण में वर्णित एक प्राचीन ऐतिहासिक मंदिर, जिसमें आदि शंकराचार्य के आगमन का वर्णन करने वाला शिलालेख है।
- **चंपारण क्षेत्र का सबसे प्रसिद्ध और ऐतिहासिक शिव मंदिर**– पूर्वी चंपारण के अरेराज में स्थित प्राचीन सोमेश्वर नाथ महादेव मंदिर है। इसके अतिरिक्त, केसरिया (पूर्वी चंपारण) में बन रहे विराट रामायण मंदिर ने 33 फुट ऊंचे शिवलिंग की स्थापना के कारण अपार प्रसिद्धि प्राप्त की है।

भागलपुर/बांका के प्रमुख शिव मंदिर

- **बुधनाथ मंदिर (आदमपुर/जोगसर)**– बाबा वृद्धेश्वरनाथ के नाम से भी जाना जाने वाला यह पूजनीय मंदिर उत्तर की ओर बहने वाली गंगा नदी के किनारे स्थित है और स्थानीय मान्यता के अनुसार त्रेता युग का है।
- **बटेश्वर स्थान (कहलगांव)**– गंगा नदी के किनारे स्थित यह प्राचीन पहाड़ी मंदिर अपने अनूठे आध्यात्मिक वातावरण और ऐतिहासिक धरोहरों के लिए जाना जाता है।
- **भूतनाथ मंदिर (गोशाला)**– भागलपुर में विश्वविद्यालय क्षेत्र के पास स्थित, यह मंदिर अपने भव्य दैनिक अनुष्ठानों और विस्तृत पुष्प श्रृंगार (सजावट) के लिए प्रसिद्ध है।
- **मानसकामना नाथ मंदिर (नाथनगर)**– नाथनगर का एक प्रमुख स्थानीय तीर्थस्थल
- **ज्येष्ठगौर नाथ मंदिर (चानन, बांका)**– चानन नदी के पास जेठौर पहाड़ी की तलहटी में स्थित, स्थानीय लोग इसे देवघर के बाबा बैद्यनाथ मंदिर से आध्यात्मिक रूप से जुड़ा मानते हैं।

उसके अतिरिक्त भागलपुर–बांका सीमा पर स्थित धनकुंड शिव मंदिर, पवित्र मंदार पहाड़ी के पास मधुसूदन मंदिर के ठीक सामने स्थित कालिये महादेव (निकेश्वरनाथ) और बांका के शंभूगंज में स्थित 11वीं सदी का भूमिहरनाथ शिव मंदिर भी प्रसिद्ध है।

'सर्वं शिवमयं जगतः'

—नीरज कृष्ण

शिव भारतीय दर्शन की वह विराट चेतना हैं, जहाँ जीवन के सभी विरोधी तत्व संघर्ष नहीं करते, बल्कि एक—दूसरे को पूर्ण करते हैं। शिव वेदों में भी हैं, तंत्र में भी; तप में भी हैं, प्रेम में भी। वे सिखाते हैं कि जीवन का सौंदर्य किसी एक गुण में नहीं, बल्कि समस्त विरोधों को आत्मसात कर उन्हें लोककल्याण में रूपांतरित करने में है। वे हमें सिखाते हैं कि जीवन किसी एक रंग, एक विचार या एक स्वभाव का नाम नहीं, बल्कि विविधताओं के अद्भुत संतुलन का नाम है।

शिव जितने सुंदर हैं, उतने ही विकराल; जितने महान योगी, उतने ही आदर्श गृहस्थ; जितने समाधिस्थ, उतने ही नटराज। उनके व्यक्तित्व में सृष्टि के समस्त विरोधी तत्व बिना किसी संघर्ष के एक—दूसरे के पूरक बनकर विद्यमान हैं। इसलिए देव, दानव, मानव, पशु, नाग, यक्ष और भूतकृसभी उनके समीप समान अधिकार से स्थान पाते हैं। शिव का दरबार भेद नहीं, समावेश का सबसे बड़ा प्रतीक है।

श्शिवश् अर्थात कल्याण, श्शंभुश् अर्थात मंगल, और श्शंकरश् अर्थात आनंद का उद्गम। वे केवल एक देवता नहीं, बल्कि भारतीय सभ्यता के सबसे विराट दार्शनिक बिंब हैं। वे बताते हैं कि वास्तविक शक्ति विनाश में नहीं, विनाशकारी शक्तियों को भी लोककल्याण में रूपांतरित करने की क्षमता में है। इसी कारण वे हलाहल पीकर नीलकंठ बनते हैं, श्मशान में रहकर भी जीवन का उत्सव रचते हैं और मृत्यु के बीच अमरत्व का संदेश देते हैं।

वे शीघ्र प्रसन्न होने वाले आशुतोष हैं, तो अधर्म के विनाश के लिए त्रिशूलधारी भी। वे तांडव के प्रणेता हैं, तो लास्य के संरक्षक भी। वे वेदों के भी हैं और तंत्र के भी; तपस्या के भी हैं और प्रेम के भी। शिव हमें सिखाते हैं कि मनुष्य की महानता किसी एक गुण में नहीं, बल्कि विरोधी प्रतीत होने वाले सभी गुणों को संतुलित कर उन्हें करुणा, विवेक और लोकमंगल की दिशा में प्रवाहित करने में है। इसीलिए शिव केवल आराध्य नहीं, बल्कि जीवन जीने की सबसे विराट कला हैं।

भगवान शिव का स्वरूप जितना रहस्यमय

दिखाई देता है, उतना ही गहन उसका दर्शन है। वे केवल पूजनीय देवता नहीं, बल्कि जीवन के प्रत्येक पक्ष को समझने की एक विराट चेतना हैं। उनके शरीर पर धारण किया गया प्रत्येक प्रतीक मनुष्य को एक ऐसा संदेश देता है, जो आज भी उतना ही प्रासंगिक है जितना सहस्रों वर्ष पूर्व था।

अर्धनारीश्वर शिव का सबसे अद्भुत स्वरूप है। आधा पुरुष और आधा स्त्रीकृयह केवल धार्मिक कल्पना नहीं, बल्कि मानव सभ्यता के लिए समानता का शाश्वत संदेश है। शिव बताते हैं कि स्त्री और पुरुष प्रतिस्पर्धी नहीं, एक—दूसरे के पूरक हैं। पुरुष कर्म का प्रतीक है तो स्त्री सृजन और संवेदना का। समाज तभी संतुलित होगा जब दोनों को समान सम्मान और समान अवसर प्राप्त होंगे।

शिव का तीसरा नेत्र केवल विनाश का प्रतीक नहीं, बल्कि जागृत विवेक का प्रतीक है। दो आँखें संसार को देखती हैं, तीसरी सत्य को। जब मनुष्य का विवेक जागृत होता है, तभी वह सही और गलत का निर्णय कर पाता है। इसलिए शिव का त्रिनेत्र हमें बाहरी दृष्टि से अधिक अंतर्दृष्टि विकसित करने की प्रेरणा देता है।

समुद्र—मंथन का हलाहल पीकर नीलकंठ बनना त्याग और आत्मसंयम की सर्वोच्च अभिव्यक्ति है। शिव विष को पीते हैं, पर उसे अपने भीतर नहीं उतरने देते। संदेश स्पष्ट हैकृजीवन में कटुता, क्रोध और विषैले विचार आएँगे, पर उन्हें अपने व्यक्तित्व का हिस्सा मत बनने दीजिए। बुराई को रोकिए, फैलाइए मत।

शिव के मस्तक पर सुशोभित चंद्रमा हमें मानसिक शीतलता का संदेश देता है। परिस्थितियाँ चाहे कितनी भी कठिन क्यों न हों, मन चंद्रमा की तरह शांत और संतुलित रहना

चाहिए। क्रोध शक्ति नहीं, संयम ही वास्तविक सामर्थ्य है।

श्मशान में निवास और शरीर पर भस्म धारण करना जीवन की नश्वरता का स्मरण कराता है। जो आज हमारा है, वह कल भस्म हो जाएगा। इसलिए अहंकार, संग्रह और मोह में उलझने के बजाय कर्तव्य, करुणा और सत्य का मार्ग अपनाना ही जीवन का सार है।

शिव के हाथ का त्रिशूल केवल अस्त्र नहीं, आत्मनियंत्रण का प्रतीक है। यह मनुष्य के भीतर विद्यमान सत्त्व, रज और तम तीनों गुणों का प्रतिनिधित्व करता है। जीवन की सफलता इन गुणों को नष्ट करने में नहीं, बल्कि उन्हें विवेकपूर्वक नियंत्रित करने में है।

गले में लिपटा नाग भय पर विजय और प्रकृति के प्रति सम्मान का संदेश देता है। शिव बताते हैं कि सृष्टि का प्रत्येक जीव जीवन–चक्र का आवश्यक अंग है। बिना कारण किसी भी प्राणी को हानि पहुँचाना प्रकृति के संतुलन को नष्ट करना है।

शिव के प्रिय नंदी धैर्य, निष्ठा और पुरुषार्थ के प्रतीक हैं। अपार शक्ति होने पर भी वे विनम्र हैं। वे सिखाते हैं कि सामर्थ्य का सर्वोत्तम रूप विनम्रता है और सफलता का आधार निरंतर कर्म।

शिव के गणों में भूत–प्रेत भी सम्मिलित हैं। यह इस बात का प्रतीक है कि शिव किसी से भेदभाव नहीं करते। समाज जिनका तिरस्कार करता है, शिव उन्हें भी अपने समीप स्थान देते हैं। उनका दरबार समावेशी हैकृवहाँ बाहरी रूप नहीं, आंतरिक भाव का मूल्य है।

शिव को अर्पित बिल्वपत्र धर्म, अर्थ और काम के संतुलित समर्पण का प्रतीक है, जबकि भांग और धतूरा हमें यह स्मरण कराते हैं कि अपनी बुराइयों, आसक्तियों और विकारों को ईश्वर के चरणों में छोड़कर आत्मशुद्धि का संकल्प लेना ही सच्ची पूजा है।

शिवलिंग की आधी परिक्रमा भी संयम और मर्यादा का संदेश देती है। यह केवल धार्मिक विधि नहीं, बल्कि यह स्मरण है कि प्रकृति और ऊर्जा के प्रति सम्मान ही आध्यात्मिकता का मूल है।

शिव की जटाएँ अनंत आकाश की प्रतीक हैं, डमरू सृष्टि के आदि नाद का, मुंडमाला मृत्यु पर विजय का और व्याघ्रचर्म अहंकार तथा हिंसा पर नियंत्रण का प्रतीक है। उनके प्रत्येक अलंकार में एक संपूर्ण जीवन–दर्शन छिपा है।

भोलेनाथ का परिवार केवल एक दिव्य चित्र नहीं, भारतीय गृहस्थ जीवन का जीवंत दर्शन है। बैल, सिंह, चूहा, सर्प और मोरसभी स्वभाव से एक–दूसरे के विरोधीहैं फिर भी एक ही परिवार का हिस्सा हैं। मतभेद हैं, स्वभाव भिन्न हैं, तनाव भी है, पर परिवार बना हुआ है क्योंकि बीच में शिव हैंकृशांत, धैर्यवान और निर्विकार। यही एक आदर्श परिवार के मुखिया की पहचान हैकृवह सबको बदलने का नहीं, सबको साथ लेकर चलने का सामर्थ्य रखता है।

यही कारण है कि शिव केवल मंदिरों में स्थापित देवता नहीं हैं; वे मनुष्य के भीतर जागृत होने वाली चेतना हैं। वे सिखाते हैं कि शक्ति बिना करुणा अधूरी है, ज्ञान बिना विवेक खतरनाक है, सफलता बिना विनम्रता व्यर्थ है और जीवन बिना समर्पण अपूर्ण है।

शिव को समझना केवल पूजा करना नहीं, बल्कि उनके प्रतीकों को अपने जीवन में उतारना है। जब मन में विवेक का तीसरा नेत्र, व्यवहार में अर्धनारीश्वर का संतुलन, वाणी में चंद्रमा की शीतलता, कर्म में नंदी का पुरुषार्थ और हृदय में नीलकंठ का धैर्य आ जाए, तभी सच्चे अर्थों में शिव हमारे भीतर प्रकट होते हैं।

द्वादश ज्योतिर्लिंग स्तोत्रम्

1. सौराष्ट्र सोमनाथं च श्रीशैले मल्लिकार्जुनम्।
उज्जयिन्यां महाकालमोंकारममलेश्वरम् ।।
सौराष्ट्र में सोमनाथ और श्रीशैल पर मल्लिकार्जुन, उज्जैन में महाकाल, ओंकारेश्वर अथवा अमलेश्वर,

2. परल्यां वैद्यनाथं च डाकिन्यां भीमशंकरम्।
सेतुबन्धे तु रामेशं नागेशं दारुकावने।।
परली में वैद्यनाथ और डाकिनी में भीमशंकर, सेतुबन्ध में रामेश्वर, दारुकावन में नागेश्वर।

3. वाराण्स्यां तु विश्वेशं त्र्यंम्बकं गौतमीतटे।
हिमालये तु केदारं घुश्मेशं च शिवालये।।
वाराणसी में विश्वेश्वर, गौतमी के तट पर त्र्यम्बकेश्वर, हिमालय में केदारेश्वर, शिवालय में घृष्णेश्वर,

4. एतानि ज्योतिर्लिंगानि सायं प्रातः पठेन्नरः।
सप्तजन्मकृतं पापं स्मरणेन विनश्यति ।।
जो भी मनुष्य प्रतिदिन प्रातः और सायंकाल को इन बारह ज्योतिर्लिंग के नाम का पाठ करता है, उनके सात जन्मों में किये हुए पाप नष्ट हो जाते हैं।

चंपानगर (भागलपुर) में संघ कार्य का विकास

–बसंत राणा

महाभारतकालीन भगदत्त द्वारा बसाया गया है भगदत्तपुर अर्थात आज का भागलपुर। महाजनपद काल में इसका नाम चंपानगर था। इस प्राचीन नगर में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के कार्य का प्रारंभ सन् 1939 में हुआ।

उस समय भारतवर्ष को द्विराष्ट्रवाद सिद्धांत के आधार पर पृथक राष्ट्र पाकिस्तान निर्माण करने के लिए मुस्लिम लीग सक्रिय थी। हिंदू समाज की दुर्दशा से दुखी होकर अशर्फी शुक्ला उर्फ छितुनी सिंह ने व्यायामशाला स्थापित की। उन दिनों यह क्षेत्र मुस्लिम बहुल था। मोहद्दीनगर, कुतुबगंज वारसलीगंज, मिरजान के क्षेत्र में 9 मस्जिदें थी। जब इस क्षेत्र में व्यायामशालाएं खुली तो दिन दुगनी संख्या बढ़ने लगी। जब इसकी संख्या 9 हो गई, तो शुक्ला जी ने दिल्ली हिंदू महासभा कार्यालय को पत्र लिखा। वे किसी ऐसी हिंदू संस्था को जानना चाहते थे जो इस व्यायामशालाओं को संगठित कर एक दिशा दे सके।

प्रथम शाखा

वहाँ से उन्हें राय दी गई कि नागपुर के डॉक्टर हेडगेवार जी को पत्र लिखें। वही कोई व्यवस्था कर सकेंगे। नागपुर पत्र देने के 10 –12 दिनों के बाद संघ के प्रखर प्रचारक बाबा साहब आपटे जी शुक्ला जी के यहां भागलपुर पहुंच गए। शुक्ला जी ने मानिकपुर के अपने छोटे भाई हरि मोहन शुक्ला के यहाँ उनके ठहरने का प्रबंध किया। उन्होंने आपटे जी को नगर के हिंदुत्व प्रेमी सज्जनों से मिलवाया। दूसरे दिन संध्या समय छितुनी सिंह पहलवान के व्यायामशाला में बजरंगबली के समक्ष भगवा ध्वज लगा। उसमें शहर के कई प्रमुख अधिवक्ता, पहलवान एवं प्रतिष्ठित लोग उपस्थित हुए। इस प्रकार संघ की प्रार्थना (जो उसे समय हिंदी तथा मराठी में थी) करा कर 1939 के प्रारंभ में प्रथम शाखा शुरु हुई। उसके बाद नरहरि पारिख जी नागपुर से प्रचारक के रूप में आए। यहां से 1939 के नागपुर के संघ शिक्षा वर्ग (ओ टी सी) के लिए श्याम सुंदर साह, सत्यनारायण शर्मा, अधीर कुमार राय एवं मुंगेर से प्रकाश चंद्र गुप्ता जी गए। वहां से लौटने के बाद भागलपुर में श्याम सुंदर साह जी ने तुरंत तीन शाखाएं प्रारंभ की जो मंदिचक, मिरजान हाई स्कूल में लगने लगी।

संघ शिक्षा वर्ग के बाद नरहरि पारिख जी दो प्रचारक प्यारे लाल तथा देशपांडे जी के साथ भागलपुर आए। यहां की शाखा अच्छे ढंग से चलने लगी। दुर्भाग्य से प्यारेलाल जी का तीन–चार माह बाद स्वर्गवास हो गया। अतः कुछ दिनों के लिए शाखा बंद हो गई। इसके बाद 1942 में भास्कर राव झंझरडे जी आये।

संघ के सिद्धांतों का प्रचार–प्रसार एवं शाखाओं का विस्तार दिन प्रतिदिन होता जा रहा था। भारत छोड़ो आंदोलन के कारण संघ की शाखा 1942 में कुछ दिनों के लिए बंद हो गई। उस आंदोलन में संघ के प्रायः सभी स्वयंसेवक शामिल हो गए थे। लेकिन उसके बाद संघ की शाखाओं का तीव्र विस्तार हुआ। स्वयंसेवकों की संख्याओं में भी वृद्धि हुई। नगर की संख्या 1000 से ऊपर हो गई थी।

गुरु जी का प्रवास –

1945 में परम पूज्य श्री गुरु जी का प्रवास हुआ। 1 घंटे की अवधि में खतरे की सूचना देकर नगर के सभी स्वयंसेवकों को मुरारका छात्रावास में शाखा वेश में बुलाया गया था। 6:30 पर सूचना दी गई थी 7:30 पर एकत्रित होना था। ठीक 7.30 बजे 400 से ऊपर स्वयंसेवकों की उपस्थिति हुई। वहां परम पूजनीय श्री गुरु जी का बौद्धिक हुआ। अपने संबोधन में उन्होंने कहा कि मैं इस स्थान को हमेशा पागलपुर कहा करता हूं, लेकिन वास्तव में आज इस नगर ने इसे चरितार्थ किया है। वास्तव में यह पागलपुर ही है, अर्थात संघ कार्य के लिए पागलरूपी निष्ठा इसके ऊपर सवार है।

गाँधी हत्या

1948 में गांधी हत्या का झूठा आरोप संघ के मत्थे लगा कर प्रतिबंधित कर दिया गया। इस कारण से 1948 फरवरी से 1949 तक संघ की

शाखाएं बंद हो गई। 1948 में माननीय बाबा साहेब आपटे जी का कार्यक्रम 31 जनवरी या 1 फरवरी को था। उससे पहले पूर्व अभ्यास लाजपत पार्क में चल रहा था। कार्यक्रम के समय किसी ने सूचना दी कि पूज्य बापूजी की हत्या हो गई है। तुरंत कार्यक्रम समाप्त कर सभी को घर जाने की अनुमति दे दी गई। दूसरे दिन आपटे जी को मुंगेर में गिरफ्तार कर केंद्रीय कारागार, भागलपुर ले जाया गया। उन्होंने जेल जाने के क्रम में कहा कि संघ पर इस हत्या का झूठा आरोप है। हत्या के 5 दिन के बाद पूरे देश में संघ पर प्रतिबंध लगा दिया गया। भागलपुर कार्यालय पर पुलिस का छापा पड़ा। कार्यालय का सभी सामान पुलिस उठा ले गई। प्रतिबंध हटने के बाद भी सामान वापस नहीं किया गया।

परम पूज्य श्री गुरुजी प्रतिबंध लगने के पहले ही 13 दिनों तक शाखा नहीं लगाने का आदेश दे चुके थे। विशेष अदालत में जब हत्या पर मुकदमा चला तब उसमें कहीं संघ का नाम तक नहीं आया। देश के कई विद्वान व बुद्धिजीवी लोगों ने सरकार से संघ पर लगे प्रतिबंध को खत्म करने की बात की, परंतु प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू ने कोई ध्यान नहीं दिया। अंततः श्री गुरुजी ने कारागार से ही सत्याग्रह करने तथा शाखा लगाने का आदेश दिए और स्वयंसेवक शाखा लगाने लगे। भागलपुर से लगभग 350 स्वयंसेवक कारागार में डाल दिए गए। कई स्वयंसेवकों को काफी कष्ट उठाना पड़ा। कई कार्यकर्ताओं के घर की कुर्की भी हुई।

प्रतिबंध से मुक्ति

संघ पर से 1949 में प्रतिबंध हटा। इसके पश्चात परम पूजनीय श्री गुरुजी का कार्यक्रम भागलपुर के सैंडिस कंपाउंड में आयोजित हुआ। कार्यक्रम के लिए वे वायुयान से आए थे। पूरे नगर में 100 से अधिक स्वागत द्वार बना था। हवाई अड्डा से खुली जीप पर उन्हें ले जाया गया। फूल मालाओं से जीप लद गया था। सड़कों का दृश्य भी देखने लायक था। मकान के ऊपर से फूल माला की वर्षा हो रही थी। रास्ते के दोनों ओर लोग दर्शनार्थ खड़े थे। ''भारत माता की जय'' और पूजनीय गुरुजी की जय जयकार से वातावरण गुंजायमान था। शाम को सैंडिन्स कंपाउंड में सार्वजनिक कार्यक्रम था। काफी ध्वनि विस्तारक यंत्र लगे थे। मंच की सजावट देखते ही बनती थी। उस कार्यक्रम में 6 से 7 हज़ार स्वयंसेवकों की उपस्थिति थी। ऐन समय पर बादल मंडराने लगे थे। मानो इंद्र देवता स्वयं उस कार्यक्रम में उपस्थित होकर आशीर्वाद देने को आतुर हों। गुरुजी का भाषण प्रारंभ होते ही जोड़ों की वर्षा प्रारंभ हो गई। ध्वनि विस्तारक यंत्र ने कार्य करना बंद कर दिया। लेकिन घनघोर बारिश में भी स्वयंसेवक तो स्वयंसेवक नागरिक भी अपना स्थान छोड़ने को तैयार नहीं थे। कार्यक्रम समाप्ति के बाद ही सभी अपने स्थान से हटे। लौटते समय नागरिकों का तांता लगा था। दोपहर को माताओं का कार्यक्रम श्री देवी बाबू के धर्मशाला में आयोजित था। उस कार्यक्रम में माताओं का उत्साह भी देखते बनता था। लगभग 3 हज़ार माताएं कार्यक्रम में उपस्थित थी। भागलपुर में माताओं का ऐसा कार्यक्रम नहीं हुआ था।

लौटते समय परम पूज्य श्री गुरुजी गाड़ी से किऊल जाने वाले थे। स्टेशन पर खचाखच भीड़ थी। गुरुजी सबको भेंट दे सकें। अतः उन्हें पुल पर बैठा दिया गया था, जिससे सभी उन्हें देख सके। गाड़ी भी होम सिग्नल के बाद बहुत धीरे–धीरे स्टेशन पर गयी। गार्ड महोदय ने पूछ कर ही गाड़ी आगे बढ़ायी। भागलपुर के लोगों के लिए यह नयनाभिराम दृश्य था।

जुलाई 1949 से अति उत्साह के साथ संघ कार्य बढ़ा। बीच में कुछ ह्रास हुआ 1954 से पुनः वृद्धि हुई। 1958 से 1962 तक कार्य सामान्य स्थिति में चला। 1963 से 1968 के बीच संघ के स्वयंसेवक एवं समाज के द्वारा विविध क्षेत्र में प्रवेश शुरू हुआ। संघ की विचारधारा से प्रेरित इन कार्यों में भागलपुर और बांका के स्वयंसेवकों की अग्रिम भूमिका रहती थी। 1969 से 1975 तक सामान्य संघ कार्य में वृद्धि रही।

(शोधार्थी, मुंगेर विश्वविद्यालय, मुंगेर)

भोजशाला – ज्ञान की निरंतरता का प्रतीक

–प्रशांत पोळ

ग्यारहवीं शताब्दी, भारत के इतिहास का संधिकाल है। इस्लामी आक्रमण प्रारंभ हो चुके थे। मालवा के राजा भोज इन्हीं दिनों, राज्य व्यवस्था का आदर्श निर्माण कर रहे थे। सन् 1010 में उनका राज्याभिषेक हुआ और अगले 45 वर्ष उन्होंने राज किया। यह सारा समय मालवा के लिए स्वर्णिम काल था। राजा भोज ज्ञान के प्रेमी थे। कला के साधक थे। अभियांत्रिकी के सिद्धहस्त थे। वह ऋषितुल्य राजा के रूप में लोगों में लोकप्रिय थे। उन्होंने अनेक विद्वानों को एकत्र किया। कुछ पुस्तकें उनसे लिखवाई और कुछ स्वतः लिखी। उन 45 वर्षों में लगभग 84 ग्रंथों की रचना की, जो आज एक हजार वर्ष के बाद भी विस्मय में डाल देती हैं। इनमें से अधिकांश ग्रंथ 'विश्वकोश' के स्तर के हैं। उन ग्रंथों के ज्ञान का स्तर कालातीत है।

धारानगरी (धार) राजा भोज की राजधानी थी। किंतु परमार वंश की पहले की राजधानी अवंतिका (उज्जयिनी, उज्जैन), हजारों वर्षों से ज्ञान का केंद्र थी। गणित, खगोल शास्त्र जैसे विषयों पर यहां निरंतर अध्ययन हो रहा था। चौथी शताब्दी में वराहमिहिर, छठवीं शताब्दी में ब्रह्मगुप्त, आठवीं शताब्दी में लल्ल जैसे विद्वानों की परंपरा बनी हुई थी। यह शोध का, शिक्षा का महत्वपूर्ण केंद्र अवश्य था, किंतु बड़े स्तर का विद्यापीठ (विश्वविद्यालय) नहीं था। राजा भोज के कालखंड में ही उज्जैन में श्रीपति, खगोल शास्त्र पर अद्भुत काम कर रहे थे।

राजा भोज ने उज्जयिनी की परंपरा को तो अक्षुण्ण रखा। किंतु उन्हें साहित्य, संस्कृत, अभियांत्रिकी आदि विषयों पर एक ज्ञान केंद्र का निर्माण करना था। यह सारे विषय राजा भोज के प्रिय विषय थे। इसलिए यह ज्ञान केंद्र, एक छोटा विश्वविद्यालय, राजधानी धारानगरी (धार) में बनाया गया । सन् 1034 में बनकर पूर्ण हुए इस ज्ञान केंद्र का नाम रखा गया – भोजशाला..!

भोजशाला ज्ञान का केंद्र था, विद्या का निवास था, प्रज्ञा का अधिष्ठान था। स्वाभाविक है, विद्या की देवी सरस्वती की सुंदर सी प्रतिमा राजा भोज ने भोजशाला में स्थापित की। यही वह 'वाग्देवी

की प्रतिमा' है, जो लंदन के संग्रहालय में कैद है। गुरुकुल की तर्ज पर संचालित इस भोजशाला में संस्कृत भाषा तथा व्याकरण का गहन अध्ययन, अध्यापन होता था। भोजशाला की दीवारों और फर्श पर उकेरे गए शिलालेखों में संस्कृत व्याकरण के नियम और चार्ट दिखाई देते हैं।

यहां खगोल विज्ञान (Astronomy), आयुध विज्ञान (Weapons Science), विमान शास्त्र (Aviation) और वास्तुकला (Architecture) जैसे उन्नत विषयों पर विस्तृत शोध और अध्यापन होता था। इन विषयों पर पढ़ने के लिए देश–विदेश के छात्र आते थे।

उन्हीं दिनों राजा भोज विभिन्न विषयों पर ग्रंथों की रचना कर रहे थे। 'समरांगण सूत्रधार', 'युक्ति कल्पतरु', 'सरस्वती कंठाभरणम', 'श्रृंगार प्रकाश', 'राजमार्तंड', 'तत्वप्रकाश', 'व्यवहार समुच्चय', नाममालिका', 'चारुचर्या', 'राज्यमृगांक', 'आयुर्वेद सर्वस्व', यह सारे ग्रंथ उन्हीं दिनों लिखे गए।

इतिहास के उस संधिकाल में, जब भारत अत्यंत वैभव और संपन्नता के कारण शिथिल हो रहा था, तब राजा भोज ने समाज को ज्ञान मार्ग और ज्ञान परंपरा की ओर मोड़ने की पहल की। उसकी प्रतीक बनी 'भोजशाला'। आगे जाकर यूरोप में जो रेनेसॉं (पुनर्जागरण) हुआ, उसके तीन सौ – चार सौ वर्ष पहले, भारत में रेनेसॉं का प्रारंभ किया राजा भोज ने, भोजशाला के रूप में। (दुर्भाग्य से आगे जाकर इस्लामी आक्रमण बढ़ता गया। भारतीय शासक हारते गए और भारतीय रेनेसॉं यहीं समाप्त हुआ)

राजा भोज ने भोजशाला को सांस्कृतिक केंद्र के रूप में भी प्रस्थापित किया। उनके कार्यकाल में और उसके बाद के परमार शासकों के काल में, यह विद्वानों और कवियों का प्रमुख मंच था। यहां

नियमित रूप से साहित्यिक गोष्ठियां होती थी। भोजशाला में नाटकों का मंचन होता था। भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण को यहां ऐसे शिलालेख मिले हैं, जिनमें राजा भोज के उत्तराधिकारी दरबारी कवि द्वारा रचित दो अंक (एक्ट) के नाटक का वर्णन है।

राजा भोज के लिखे ग्रंथों का अध्यापन भोजशाला में होता था। समरांगण सूत्रधार में राजा भोज ने नगर नियोजन और वास्तु शास्त्र के बारे में विस्तार से लिखा है। भोजशाला के निर्माण के लगभग 116 वर्षों के पश्चात, अर्थात वर्ष 1150 में, धारानगरी (धार) से 3180 किलोमीटर दूर, कंबुज देश (कंबोडिया) में एक अत्यंत विशाल प्रार्थना स्थल का निर्माण हुआ। यही प्रसिद्ध 'अंगकोर वाट' है, जो सारे विश्व में सबसे बड़ा प्रार्थना स्थल है। अंगकोर वाट के निर्माण में जो सिद्धांत, आदर्श और संदर्भ लिए गए हैं, वह सारे समरांगण सूत्रधार में उपलब्ध है।

समरांगण सूत्रधार में वास्तुपुरुष मंडल का विस्तृत आलेख 11 से 14 अध्याय में दिया है। अंगकोर वाट का पूरा ढांचा, वास्तुपुरुष मंडल की ग्रिड प्रणाली पर आधारित है। इसमें ब्रह्मांडीय ऊर्जा के प्रवाह को ध्यान में रखकर, केंद्र और दिशाएं तय की गई हैं।

समरांगण सूत्रधार में विभिन्न प्रकार के मंडलों का उल्लेख है। मंदिरों और राजमहलों के लिए 64 पदों के 'मंडूक मंडल' को महत्वपूर्ण माना जाता है। अंगकोर वाट के संपूर्ण मास्टर प्लान और उसके गर्भगृह में 'मंडूक मंडल' का सटीक प्रभाव दिखाई देता है। अंगकोर वाट का सबसे अहम हिस्सा, जहां केंद्रीय शिखर स्थित है, वह 64 पद के मंडूक मंडल के केंद्र (ब्रह्मस्थान) को दर्शाता है। यह मेरु पर्वत की रचना है।

सूर्यवर्मन (द्वितीय) द्वारा बनाए हुए इस विशाल मंदिर समूह में संस्कृत भाषा, भारतीय पंचांग, रामायण – महाभारत, मंदिर स्थापत्य, राजधर्म की अवधारणा इन सभी की झलक स्पष्ट दिखती है।

समरांगण सूत्रधार में वर्णित रचना के आधार पर अंगकोर वाट का निर्माण हुआ होगा, यह मानना कठिन है। समरांगण सूत्रधार में नया कुछ नहीं लिखा है। स्थापत्य शास्त्र के प्राचीन ग्रंथ मयमतम् (मयमतमुलाकला शास्त्र), मानसर शिल्पशास्त्र आदि ग्रंथों के आधार पर समरांगण सूत्र लिखा गया है। अंगकोर वाट भी इन्हीं प्राचीन स्थापत्य शास्त्रों के ग्रंथों के आधार पर निर्मित हुआ है। अर्थात, हजारों किलोमीटर दूरस्थ रहकर भी, भारतीय ज्ञान परंपरा दोनों स्थानों पर प्रवाहित थी।

इसी परंपरा को जीवित रखा भारतीय विद्यापीठों ने आर्थात, विश्वविद्यालयों ने। तक्षशिला, नालंदा, उड्डयंतपुर (ओदंतपुर), विक्रमशिला, सुलोटगी, कांची आदि विश्वविद्यालयों ने यह परंपरा जारी रखी। भोजशाला भी इसी परंपरा की संवाहक थी। यह विज्ञान, कला और अध्यात्म का जीवंत केंद्र था, जहां हजारों छात्र अपनी बौद्धिक जिज्ञासा शांत करने आते थे।

ग्यारहवीं शताब्दी में महमूद गजनवी के साथ अरब का प्रवासी इतिहासकार अलबरूनी भारत आया था। अपनी ऐतिहासिक पुस्तक 'तारीख–उल–हिंद' में राजा भोज, उसकी राजधानी धारानगरी और यहां के ज्ञान केंद्र के बारे में अलबरूनी ने लिख है – 'धारानगरी विद्वानों की नगरी है। यहां के ज्ञानकेंद्र में स्थापित वेधशाला अत्यंत सूक्ष्मता और सुस्पष्टता के साथ कार्य करती है।' (अल–बरुनी के धारानगरी प्रवास के समय भोजशाला का निर्माण चल रहा था) फरिश्ता और निजामुद्दीन अहमद जैसे तत्कालीन विदेशी इतिहासकारों ने भी धार और भोजशाला की प्रशंसा की है।

इस्लाम के आक्रमणों के कारण भारत के ज्ञान मंदिर, विद्यापीठ (विश्वविद्यालय) धीरे–धीरे समाप्त होते गए। वर्ष 1193 में बख्तियार खिलजी ने विश्व के तत्कालीन सबसे बड़े विश्वविद्यालय, नालंदा को बेरहमी से नष्ट किया। वहां का सारा ग्रंथ भंडार महीनों तक जलता रहा। विक्रमशिला के विश्वविद्यालय में पढ़ रहे 10,000 विद्यार्थियों को नृशंसता के साथ काट डाला। उनकी हत्या की।

भारत में उच्च शिक्षा, उन्नत ज्ञान की परंपरा लगभग खंडित सी हो गई। 1193 में नालंदा के विध्वंस के बाद अगले कुछ ही वर्षों में, लगभग सभी बड़े विश्वविद्यालय बंद होते गए। वर्ष 1305 में, 271 वर्षों बाद, अलाउद्दीन खिलजी ने आक्रमण करके भोजशाला को ध्वस्त किया। अंततः भारतीय ज्ञान परंपरा की अंतिम लौ भी बुझ गई।

सही शीर्षक

—रवींद्र कुमार

प्रधानमंत्री आवास के निर्माण में हुई गड़बड़ी की जांच शुरू

सभी जानते हैं कि प्रधानमंत्री आवास दिल्ली में है, जिसका निर्माण बहुत पहले हो चुका है और उसके निर्माण में किसी प्रकार की गड़गड़ी की कोई चर्चा भी नहीं है। ऐसी स्थिति में इस शीर्षक का कोई मतलब नहीं निकलने से यह निरर्थक हो जाता है। शीर्षक समाचार का सार होता है, क्योंकि यह समाचार में उल्लिखित बातों का प्रतिनिधित्व करता है। पाठक शीर्षक देखकर ही तय करता है कि यह समाचार उसे पढ़ना है या नहीं। पाठक यदि जल्दी में हो, तो वह पूरी खबर नहीं पढ़ पाता और शीर्षकों से ही खबरों का अंदाजा लगाकर चल देता है।

अब जरा इस बेतुके शीर्षक की खबर पर विचार करें। इस खबर में चर्चा है कि तीन प्रखंडों में प्रधानमंत्री आवास योजना के तहत मकान के निर्माण में हुई गड़बड़ी की जिलाधिकारी द्वारा गठित टीम ने जांच शुरू कर दी है। लेकिन, शीर्षक में 'योजना' छूट जाने से यह गड़बड़ी हुई है। शीर्षक में अक्षर बढ़ जाने पर किसी भी जरूरी शब्द को शीर्षक से हटा देने की हाल के वर्षों में जो प्रव ृत्ति बढ़ी है, उसी का यह परिणाम है। वस्तुस्थिति यह है कि 'प्रधानमंत्री आवास योजना' के बदले 'प्रधानमंत्री आवास' का धड़ल्ले से प्रयोग चल पड़ा है। इसमें शीर्षक लगाने वालों को कोई चिंता नहीं होती। इसमें अक्षर बढ़ने की जो समस्या है, उसे भी थोड़े प्रयास के बाद ठीक किया जा सकता है। इसके लिए 'प्रधानमंत्री आवास योजना' के बदले 'पी.एम. आवास योजना' का प्रयोग करना युक्तिसंगत होगा। शीर्षक लगाते वक्त यह बात सदैव ध्यान में रखनी चाहिए कि वह द्विअर्थी न हो, क्योंकि इससे पाठाकों के मन में गलतफहमी पैदा होती है। अतः कुल मिलाकर इस शीर्षक को इस प्रकार लिखा जाना उपयुक्त होगा –

प्रधानमंत्री आवास योजना के भवन निर्माण में हुई गड़बड़ी की जांच शुरू

जैविक खाद का इस्तेमाल कर खेत की उर्वरक शक्ति बढ़ाएं : मंत्री

इस शीर्षक के समाचार में फसल की उपज बढ़ाने के लिए खेत में जैविक खाद का इस्तेमाल करने पर मंत्री महोदय द्वारा बल दिया गया है। अब जरा इस शीर्षक में प्रयुक्त जैविक खाद और उर्वरक शब्दों पर विचार करें। जीव संज्ञा का जैविक विशेषण है। जैविक वह है, जिसका संबंध जीव से हो। इसीलिए केंचुआ आदि जीवों से तैयार की गई खाद जैविक खाद कहलाती है। दूसरी तरफ रासायनिक खाद को उर्वरक कहा जाता है। तात्पर्य यह कि ये दोनों खाद के ही दो प्रकार हैं। रासायनिक खाद का उर्वरक नाम इसलिए दिया गया है कि इससे भूमि उर्वर यानी उपजाऊ (फर्टाइल) बनती है।

अब प्रश्न उठता है कि एक प्रकार की खाद के इस्तेमाल से दूसरे प्रकार की खाद की शक्ति कैसे बढ़ जाएगी, क्योंकि खाद का इस्तेमाल तो खेत की उपज करने की शक्ति यानी खेत को उपजाऊ बनाने के लिए किया जाता है। दरअसल, खेती की उपज बढ़ाने की शक्ति यानी खेती की उर्वरता बढ़ाकर उसे उर्वरा (उपजाऊ) बनाने के लिए उर्वरक अथवा जैविक खाद का इस्तेमाल किया जाता है। तात्पर्य यह कि जैविक खाद और उर्वरक दोनों का इस्तेमाल खेत की उर्वरा शक्ति बढ़ाने के लिए यानी खेत को अधिक उपजाऊ बनाने के लिए किया जाता है। अतः यहां 'उर्वरक' के स्थान पर 'उर्वरा' शब्द का प्रयोग किया जाना चाहिए था। लगता है, उर्वरा की तुलना में उर्वरक शब्द के अधिक प्रचलित होने के कारण शीर्षक में भ्रमवश उर्वरा के बदले उर्वरक शब्द का प्रयोग कर दिया गया है। अतः सही भावाभिव्यक्ति के लिए इस शीर्षक को इस प्रकार लिखा जाना चाहिए था –

जैविक खाद का इस्तेमाल कर खेत की उर्वरा शक्ति बढ़ाएं : मंत्री

क्या बाइबल अनुकरण के योग्य है

दुनिया भर में यह माना जाने लगा है कि ईसाइयत के सिद्धांत अब छद्म रूप से दुनिया को चला रहे हैं। यहां तक की वर्तमान विश्वव्यवस्था को कतित रूप में संचालित करने वाले कारक स्वतंत्रता, समता और बंधुत्व बाइबल से ही निकले है। लोकतंत्र से लेकर वर्तमान दुनिया की अधिकतर अच्छी चीजों को ईसाइयत के पैरोकार बाइबल से निकला बताते हैं। ऐसी स्थिति में बाइबल की भी समीक्षा जरूरी है कि क्या यह धर्मग्रंथ सचमुच आधुनिक मानव के लिए आदर्श है या फिर इसके मानवता विरोधी सिद्धांतों को छिपाया जा रहा है।

1. मूल पाप (Original Sin) और सामूहिक उत्तरदायित्व

तर्कः आदम और हव्वा के पाप की सजा पूरी मानवता को क्यों दी जा रही है?

विरोधाभासः व्यवस्था विवरण (Deuteronomy 24:16) में स्पष्ट कहा गया है, ''पिता के पाप के लिए संतानों को सजा नहीं दी जाएगी'' जबकि मूल पाप की अवधारणा इसके विपरीत पूरी मानव जाति को दोषी ठहराती है।

नोट– नीग्रो लोगों के नरसंहार को कई ईसाई संगठन हजरत नूह के शाप के कारण सही ठहराते हैं।

2. वैज्ञानिक और व्यावहारिक त्रुटियां

बाइबिल के कुछ अंश आधुनिक जीव विज्ञान और प्राणी विज्ञान के सिद्धांतों के विपरीत प्रतीत होते हैं–

- चमगादड़ को पक्षी बतानाः (Leviticus 11:13 & 19) में चमगादड़ (जो एक स्तनधारी/उंउउंस है) को पक्षियों की श्रेणी में रखा गया है।
- खरगोश का जुगाली करनाः (Leviticus 11:5&6) में लिखा है कि खरगोश जुगाली करता है, जो जैविक रूप से असत्य है।
- चार पैरों वाले पक्षी और कीटः लेव्यव्यवस्था (Leviticus 11:20&23) में चार पैरों वाले पक्षियों और कीटों का उल्लेख है।
- नोट– भूकंद्रीय सिद्धांत को बाइबल में सही ठहराने के कारण गैलीलियो जैसे वैज्ञानिक को प्रताड़ना झेलनी पड़ी।

3. स्वर्ग की पूर्णता पर प्रश्न

तर्करू स्वर्ग को एक पूर्ण और पापमुक्त स्थान माना

जाता है, लेकिन प्रकाशितवाक्य (Revelation 12:7) के अनुसार स्वर्ग में युद्ध हुआ था। यदि पूर्ण स्थान पर युद्ध हो सकता है, तो वह मुक्ति या शांति का स्थान कैसे हुआ?

4. उद्धार (Salvation) का तरीकारू विश्वास, तौबा या कर्म?

बाइबिल में उद्धार पाने के तीन अलग–अलग तरीके बताए गए हैं जो आपस में मेल नहीं खाते:
केवल विश्वास द्वारा: यूहन्ना (John 3:18 & 36)
पश्चाताप (Repentance) द्वारा: 2 पतरस (2 Peter 3:9)
आज्ञाओं का पालन/कर्म (Works) द्वारारू मत्ती (Matthew 19:16&18)

5. गणितीय त्रुटियां (Biblical Math)

तर्क: यहोशू (Joshua 15:21&32) में शहरों की सूची दी गई है। पाठ के अंत में कुल संख्या 29 लिखी गई है, जबकि यदि सूची में दिए गए शहरों को गिना जाए तो कुल संख्या 36 बैठती है।

6. उपदेशक (Ecclesiaste) की ऐतिहासिक सत्यता

तर्क: उपदेशक (Ecclesiastes 1:9) में लिखा है कि "सूरज के नीचे कुछ भी नया नहीं है", लेकिन आधुनिक इतिहास में 1945 का परमाणु बम विस्फोट और 1969 में चंद्रमा पर इंसान का कदम रखना जैसी घटनाएं पूरी तरह से नई और अभूतपूर्व थीं।

7. नैतिक और अश्लील/हिंसक प्रसंग

तर्क: धर्मग्रंथ को नैतिक मार्गदर्शक माना जाता है, लेकिन 2 राजा (2 Kings 18:27) और गिनती (Numbers 31) जैसे अध्यायों में अत्यंत हिंसक, अमानवीय और अनैतिक विवरण मिलते हैं।

8. बुराई का स्रोत और ईश्वर की जिम्मेदारी

तर्क: यदि ईश्वर ने सब कुछ बनाया है (Colossians 1:16), तो दुनिया में बुराई, बलात्कार, बीमारी और भुखमरी का निर्माण भी उसी ने किया है (Isaiah 45:7] Lamentations 3:38)। इस आधार पर सर्वशक्तिमान ईश्वर को ही इन अपराधों का जिम्मेदार माना जाना चाहिए।

9. अनंत नरक की अवधारणा और न्याय

तर्क: न्याय का नियम है कि सजा अपराध के अनुपात में होनी चाहिए। मनुष्य के पाप सीमित (finite) होते हैं, लेकिन नरक की सजा अनन्त (infinite) है। अनंत दंड न्याय के सिद्धांत के खिलाफ है।

10. ईसा मसीह (Jesus) के उपदेशों और आचरण में विरोधाभास

मूर्ख कहने पर नरक की चेतावनी: मत्ती (Matthew 5:22) में ईसा मसीह कहते हैं कि किसी को 'मूर्ख' कहने वाला नरक की आग के खतरे में होगा, लेकिन मत्ती (27:19) और लूका (11:40] 12:20) में वे स्वयं दूसरों को मूर्ख कहते हैं।
शत्रुओं से प्रेम: मत्ती (12:34) और (23:27) में अपने विरोधियों को सांप की नस्ल और कपटियों की संज्ञा देकर अपने ही उपदेश का उल्लंघन करते हैं।

11. ऐतिहासिक साक्ष्यों का अभाव

तर्क: प्राचीन काल के गैर–ईसाई या समकालीन निष्पक्ष इतिहासकारों (Outside Historical Accounts) के लेखों में ईसा मसीह के जीवन का कोई स्पष्ट और अकाट्य प्रमाण नहीं मिलता है।

12. ईसा मसीह की अधूरी भविष्यवाणियां

तर्क: ईसा मसीह ने अपने जीवित अनुयायियों के सामने दावा किया था कि उनके समय के कुछ लोगों के मरने से पहले ही वे अपने राज्य के साथ वापस लौटेंगे (Matthew 16:28] Mark 9:1] Luke 9:27)। ये भविष्यवाणियां पूरी नहीं हुईं।

(इस कॉलम के बारे में पाठकों के प्रतिक्रिया की प्रतीक्षा रहेगी –सं.)

स्वयंसेवकों ने प्रस्तुत किया उदाहरण
पुरी रथयात्रा में लाखों की भीड़, पलभर में मिला एम्बुलेंस को रास्ता,

पुरी में महाप्रभु श्री जगन्नाथ रथ यात्रा 2026 के दौरान सनातन संस्कृति और मानवता की अद्‌भुत झलक दिखी। लाखों की भीड़ में पलक झपकते ही एम्बुलेंस को रास्ता दिया गया।

ओडिशा के पावन क्षेत्र पुरी धाम में महाप्रभु श्री जगन्नाथ, भगवान बलभद्र और देवी सुभद्रा के विश्व प्रसिद्ध रथ यात्रा 2026 उत्सव में श्रद्धा और भक्ति का महासागर उमड़ पड़ा है। ''जय श्री जगन्नाथ'' के उद्‌घोष से पुरी नगरी गुंजायमान है और देश–विदेश से आए लाखों श्रद्धालु अपने आराध्य के दर्शन पाकर निहाल हो रहे थें।

भक्ति के इस अपार जनसैलाब के बीच पुरी की धरती से सनातन संस्कृति और अटूट मानवीय संस्कारों की एक ऐसी अद्‌भुत और हृदयस्पर्शी तस्वीर सामने आई, जिसने पूरे देश को भावुक कर दिया। यहाँ ईश्वर की भक्ति के साथ–साथ ''जीवेषु करुणा'' और जीवन की रक्षा को ही सर्वोच्च धर्म माना गया है।

लाखों की भीड़ में पलक झपकते ही बना एम्बुलेंस के लिए रास्ता

रथ यात्रा के मुख्य मार्ग (बड़ा डांड) पर जब लाखों की संख्या में श्रद्धालु रथों के आगे चल रहे थे, तभी अचानक भीड़ के बीच एक श्रद्धालु की तबीयत बिगड़ गई और वह बेहोश हो गया। आपातकालीन स्थिति को देखते हुए पीड़ित को तुरंत चिकित्सा सुविधा उपलब्ध कराने के लिए एम्बुलेंस को बलाया गया।

पुरी में इतनी अभूतपूर्व भीड़ के बीच कानून–व्यवस्था और जन सुविधाओं को बनाए रखने में प्रशासन के साथ–साथ सामाजिक संगठनों के कार्यकर्ता भी दिन–रात जुटे हुए हैं। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सैकड़ों स्वयंसेवक रथ यात्रा मार्ग, पार्किंग स्थलों और चिकित्सा सहायता शिविरों सहित विभिन्न नागरिक व्यवस्थाओं में पूरी मुस्तैदी के साथ सहयोग कर रहे थें।

पुरी रथ यात्रा 2026 की यह घटना केवल एक

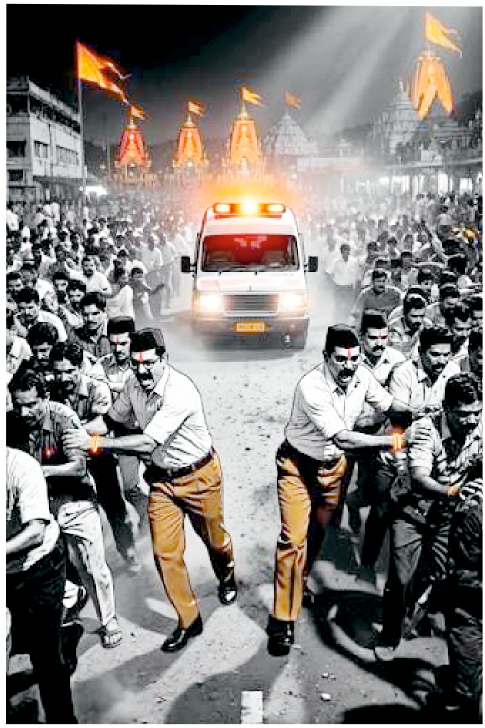

धार्मिक आयोजन का हिस्सा नहीं है, बल्कि यह दुनिया के सामने सनातन संस्कृति के उस वैश्विक संदेश को जीवंत करती है जो सिखाती है कि मानव सेवा ही वास्तव में माधव सेवा (ईश्वर की सेवा) है।

स्वयंसेवकों की मुख्य सेवा भूमिकाएं:

- भीड़ के अत्यधिक दबाव वाले क्षेत्रों में कतारबद्ध व्यवस्था बनाने में स्थानीय पुलिस की सहायता करना।
- गंभीर गर्मी और उमस को देखते हुए श्रद्धालुओं के लिए शुद्ध पेयजल और ओआरएस घोल का निरंतर वितरण करना।
- अस्वस्थ या बेहोश होने वाले मरीजों को प्राथमिक चिकित्सा (First Aid) देकर उन्हें एम्बुलेंस तक सुरक्षित पहुंचाने में त्वरित मदद करना।

'धर्म बदलो और मेरी हो जाओ': छात्रा से अश्लील चैट और दुष्कर्म के प्रयास का मामला

—दीपशिखा

बिहार के सारण जिले का एक मामला इन दिनों चर्चा में है। आरोप है कि एक गणित शिक्षक ने नाबालिग छात्रा को सोशल मीडिया के माध्यम से अश्लील संदेश भेज। उस पर धर्म परिवर्तन का दबाव बनाया और उसे धमकी दी कि यदि उसने उसकी बात नहीं मानी तो उसे अनुतीर्ण कर देगा। छात्रा और उसके परिजनों की शिकायत के बाद पुलिस ने मामला दर्ज कर शिक्षक को गिरफ्तार कर लिया है। प्रारंभिक जांच में पुलिस डिजिटल साक्ष्यों, सोशल मीडिया चैट और मोबाइल फोन की भी जांच कर रही है। शिक्षा विभाग ने भी मामले का संज्ञान लेते हुए विभागीय कार्रवाई की प्रक्रिया शुरू कर दी है।

मीडिया रिपोर्टों के अनुसार, आरोपी शिक्षक छात्रा को इंस्टाग्राम और अन्य माध्यमों से लगातार संदेश भेजता था। आरोप है कि उसने छात्रा को "हाय सोना, कैसी हो" जैसे निजी संदेश भेजे और धीरे—धीरे बातचीत को अश्लील दिशा देने का प्रयास किया। शिकायत में यह भी कहा गया है कि शिक्षक ने धर्म परिवर्तन करने और उससे संबंध बनाने का दबाव बनाया। छात्रा के विरोध करने पर उसे परीक्षा में अनुतीर्ण करने की धमकी देने का भी आरोप लगाया गया है। इन आरोपों की जांच पुलिस कर रही है और अंतिम सत्य न्यायिक प्रक्रिया के बाद ही स्पष्ट होगा।

घटना सामने आने के बाद स्थानीय लोगों और अभिभावकों में आक्रोश देखा गया। उनका कहना है कि शिक्षक और छात्र के बीच का संबंध विश्वास और सम्मान पर आधारित होता है। यदि कोई शिक्षक अपनी स्थिति का दुरुपयोग करता है, तो इससे न केवल एक छात्र बल्कि पूरे शिक्षा तंत्र की विश्वसनीयता प्रभावित होती है। यही कारण है कि ऐसे मामलों में त्वरित और निष्पक्ष जांच की मांग की जा रही है।

पुलिस ने बताया है कि शिकायत मिलते ही आरोपी को हिरासत में लेकर पूछताछ शुरू की गई। जांच एजेंसियां मोबाइल फोन, सोशल मीडिया अकाउंट और अन्य डिजिटल साक्ष्यों की जांच कर रही हैं ताकि आरोपों की पुष्टि की जा सके। यदि जांच में आरोप सही पाए जाते हैं, तो संबंधित कानूनी धाराओं के तहत कठोर कार्रवाई की जाएगी।

इस घटना ने स्कूलों में बच्चों की सुरक्षा और डिजिटल माध्यमों पर निगरानी को लेकर भी कई सवाल खड़े किए हैं। विशेषज्ञों का मानना है कि शिक्षकों और छात्रों के बीच निजी सोशल मीडिया संपर्क को लेकर स्पष्ट दिशा—निर्देश होने चाहिए। साथ ही अभिभावकों को भी बच्चों की ऑनलाइन गतिविधियों पर संतुलित निगरानी रखनी चाहिए और किसी भी संदिग्ध व्यवहार की जानकारी तुरंत स्कूल प्रशासन या पुलिस को देनी चाहिए।

यह मामला केवल एक व्यक्ति के खिलाफ लगे आरोपों तक सीमित नहीं है, बल्कि यह शिक्षा संस्थानों में सुरक्षित वातावरण बनाए रखने की आवश्यकता को भी रेखांकित करता है। स्कूलों में समय—समय पर लैंगिक संवेदनशीलता, बाल सुरक्षा और साइबर सुरक्षा से जुड़े जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए जाने चाहिए ताकि छात्र—छात्राएं अपने अधिकारों और सुरक्षा उपायों से परिचित रहें।

फिलहाल यह मामला जांच के अधीन है। आरोपी पर लगाए गए आरोपों की सत्यता का अंतिम निर्णय न्यायालय में उपलब्ध साक्ष्यों और कानूनी प्रक्रिया के आधार पर होगा। इसलिए इस मामले को लेकर किसी भी निष्कर्ष पर पहुंचने से पहले आधिकारिक जांच और न्यायिक निर्णय का इंतजार करना आवश्यक है।

वर्षाऋतुचर्या

– डा. सुवर्णा श्रेया

वर्षा ऋतु विसर्ग काल की ऋतु है। इसमें जठराग्नि अत्यन्त दुर्बल रहती है। ग्रीष्म ऋतु के बाद वर्षा ऋतु आने पर क्रमशः दूषित वातादि दोषों का प्रकोप होता है तथा जठराग्नि और भी दुर्बल हो जाती है। इस ऋतु में आकाश से जल बरसने, भूमि से वाष्प निकलने तथा जल का अम्ल विपाक होने के कारण अग्नि मन्द हो जाती है। हमारे आचार्यों ने मन्दाग्नि को ही सभी रोगों का मूल कारण बताया है, रोगाः सर्वेऽपि मन्देऽग्नौ।" आचार्य सुश्रुत ने ऋतुचर्या अध्याय में अहोरात्र में भी छः ऋतुओं के समान शारीरिक दोषों में परिवर्तन की अवधारणा बताई है और सन्ध्या के समय शरीर में वर्षा ऋतु के समान लक्षण उत्पन्न होना बताया ह। स्वस्थवृत की दृष्टि से श्रावण –भाद्रपद (नभ –नभस्य) मास एवं शोधन की दृष्टि से भादो –क्वार (आश्विन) मास वर्षाऋतु के अंतर्गत आने वाले महीने हैं। इस ऋतु में अम्ल रस की उत्पत्ति होती है अतः अम्ल रस प्रधान द्रव्यों का विशेष रूप से सेवन में वर्षा ऋतु में करना चाहिए। वर्षा ऋतु में वात दोष का प्रकोप तथा पित्त का संचय होता है। वहीं आचार्य चरक ने वर्षा ऋतु का वर्णन करते हुए कहा भी है –

''कुप्यन्ति पवनादयः ''अर्थात् आचार्य ने इस ऋतु में वात का प्रकोप मुख्य रूप से एवं पित्त और कफ का प्रकोप अनुबंधरूप से होना बताया है।

वर्षा ऋतु में सेवनीय आहार एवं विहार –

आहार –थोड़ी मात्रा में मधु सभी भोज्य पदार्थ में मिलाकर (यह योगवाही एवं क्लेद का नाश करने वाला है), मधुर रस, अम्ल रस, लवण रस वाले पदार्थों का सेवन ; स्नेह द्रव्य प्रधान आहार, मुख्य भोजन में मधु, घृत, लवण मिलाकर सेवन, पुराना जौ, चावल, मांसरस, यूष सेवन ,आकाश का जल, कूप का जल अथवा पकाया हुआ जल पान ,मधु मिलाकर माध्विक , अरिष्ट एवं जल, सेवन, पुरातन मधु एवं पुरातन अरिष्ट सेवन, सौवर्चल नमक / पञ्चकोल से मिश्रित द्रव्यों का पान इत्यादि ।

विहार – प्रघर्षण, उबटन, सुगन्धित द्रव्य, हल्के पवित्र वस्त्र, क्लेदरहित स्थान पर निवास।

वर्षा ऋतु में वर्जित आहार एवं विहार :–

वर्जित आहार –उदमन्थ (जल में घुला सत्तू), नदी का जल, गुरु भोजन, रुक्ष भोजन, वात प्रकोपक आहार इत्यादि।

वर्जित विहार – दीवास्वप्न, पैदल चलना, अवश्याय,व्यायाम,मैथुन,धूप में बैठना ।

वर्षा ऋतु में रोगों की चिकित्सा :–

वर्षा ऋतु में मुख्यतः वात दोष का प्रकोप होता है, जिसके कारण वातजन्य रोगों की संभावना इस ऋतु में अधिक बढ़ जाती है। अतः रोगी की प्रकृति, विकृति एवं रोग की अवस्था को ध्यान में रखते हुए वात दोष के शमन हेतु उचित चिकित्सा का चयन एवं प्रयोग करना चाहिए ।

इस ऋतु में अग्निमांद्य की स्थिति उत्पन्न हो जाती है, जिसके लिए आचार्य वाग्भट ने अग्निदीपन एवं पाचन को बढ़ाने वाले उपायों का सेवन करने का निर्देश दिया है, यथा –

''वह्निनैव च मन्देन, तेष्वित्यन्योन्यदूषिषु।
भजेत्साधारणं सर्वमूष्मणस्तेजनं च यत्।।''

आचार्य सुश्रुत ने स्नेहपान, बस्ति आदि उपक्रम वातदोष शमानार्थ वर्षा ऋतु में बताया है जबकि आचार्य वागभट्ट ने आस्थापन बस्ति का निर्देश दिया है। यथा –आस्थापनं शुद्धतनुजीर्णं –

निष्कर्ष :– वर्षा ऋतु में वातावरण में आर्द्रता, जल की अशुद्धता तथा वात दोष के प्रकोप के कारण शरीर की जठराग्नि मंद हो जाती है। परिणामस्वरूप विभिन्न प्रकार के रोगों के उत्पन्न होने की संभावना अत्यधिक बढ़ जाती है। अतः वर्षा ऋतु में शास्त्रोक्त आहार –विहार के अनुसार सावधानियाँ अपेक्षित है।

संघ (छपरा) के वट वृक्ष की कमी खलेगी

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के 77 वर्ष पुराने स्वयंसेवक शम्भु कमलाकर मिश्र जी 10 अगस्त, 2026 को गोलोकवासी हुए। 83 वर्षीय कमलाकर जी की पत्नी ने भी इसी 7 अगस्त को अपनी अंतिम सांस ली थी। सम आयु वय की इस जोड़ी ने 64 वर्ष का वैवाहिक जीवन साथ बिताया था।

शम्भु कमलाकर मिश्र जी बहु आयामी व्यक्तित्व के धनी थे। मृत्यु के 8 दिन पूर्व गुरु (भगवा ध्वज) के समक्ष अपना समर्पण कर मृत्यु के दिन तक स्वयंसेवक भाव को जीने वाले कमलाकर जी गजब के पढ़ाकू थे। 4 हज़ार से अधिक पुस्तकों के बारे में विस्तृत जानकारी चुटकियों में देते थे। हिन्दी के शिक्षक सभी जगह भोजपुरी में ही बात करते थे। इसका श्रेय वे अपने गुरु मनोरंजन प्रसाद सिंह को देते थे। मनोरंजन बाबू ने 'फिरंगिया' जैसी कालजयी गीत लिखा था। इस गीत से महात्मा गांधी इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने अपने सचिव को आदेश दिया था कि मनोरंजन बाबू बिना पूर्व समय लिए भी जब चाहे मिल सकते हैं। समय के पाबंद शंभु जी खेल, विशेषकर क्रिकेट के बड़े प्रेमी थे।

कमलाकर जी को संघ के संस्कार परिवार से ही मिले थे। आपके पूज्य पिताजी स्व. अवध बिहारी मिश्र जी सारण जिला के संघ संस्थापकों में एक थे। शम्भु जी के बड़े पिताजी स्व. पंडित भरत मिश्र प्रखर स्वतंत्रता सेनानी थे तथा संस्कृत के प्रख्यात विद्वान थे। उस समय के सभी बड़े कांग्रेसी नेताओं का इनके यहां आना जाना था। जेल में एकसाथ रहने के दरम्यान राजेन्द्र बाबू को इन्होंने श्रीमद्भगवद्गीता पढ़ाया था। 1947 में जब देश स्वाधीन हुआ तो ये पुनः पठन–पाठन में लग गये। किसी प्रकार की कोई सरकारी सुविधा नहीं ली। राष्ट्रपति राजेंद्र बाबू ने इनके लिए राष्ट्रपति भवन में एक विशेष कमरा आरक्षित करवा रखा था। इन्हें 1982 में संस्कृत के विद्वता के लिए राष्ट्रपति पुरस्कार भी मिला था। शम्भु जी के पूज्य दादाजी पंडित लक्ष्मी नारायण मिश्र जी भी संस्कृत के उद्भट विद्वान थे। इनके नाम पर छपरा में एक उच्च विद्यालय है।

कमलाकर जी के पाँच पुत्रों में से दो बेटे डॉ० विनायक पद्माकर जी और रजनीश सुधाकर जी संघ के समर्पित कार्यकर्ता हैं। डॉ० विनायक पद्माकर जी राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के दक्षिण बिहार के सह प्रांत कार्यवाह का दायित्व निभा रहे हैं। पूरा परिवार और बाद की पीढ़ी भी संघ कार्य से जुड़ी है।

लाल बिहारी सिंह नहीं रहे

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के वरिष्ठ स्वयंसेवक, नालंदा जिला के प्रख्यात शिक्षाविद् एवं वरिष्ठ पत्रकार लाल बिहारी सिंह अब नहीं रहे। 26 जुलाई को पटना स्थित एनएमसीएच में उन्होंने अंतिम सांस ली। उनके पुत्र और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के नालंदा विभाग, प्रचार प्रमुख मृत्युंजय कुमार ने बताया कि लाल बिहारी सिंह बाल्यकाल के स्वयंसेवक थे। हिलसा में लंबे समय तक नगर संघचालक रहे। वे लंबे समय तक आर्यावर्त समाचार पत्र से जुड़े रहे और जनहित से जुड़े मुद्दों को प्रमुखता से उठाने के लिए जाने जाते थे। उनकी निष्पक्ष पत्रकारिता और सामाजिक सरोकारों ने उन्हें क्षेत्र में एक अलग पहचान दिलाई। स्वर्गीय सिंह राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से भी लंबे समय तक जुड़े रहे। इसके अलावा योग, प्राणायाम और सामाजिक जागरूकता के कार्यक्रमों में उनकी सक्रिय भागीदारी रही। उनके दो पुत्रो में बड़े सत्यम जी संघ के प्रचारक थे, जिनकी सड़क दुर्घटना में 1991 में मृत्यु हो गई थी। इनके छोटे पुत्र मृत्युंजय कुमार रा. स्व. संघ के नालंदा विभाग के प्रचार प्रमुख हैं।

खेतों की ओर लौटे अभिषेक

बनें दो लाख किसानों के साथी

कृषि को अक्सर कम आय, जोखिम और अनिश्चितता से जोड़कर देखा जाता है। ऐसे समय में जब ग्रामीण युवा बेहतर रोजगार की तलाश में शहरों की ओर जा रहे हैं, बिहार के अभिषेक कुमार ने इसके ठीक विपरीत रास्ता चुना। पुणे की कॉर्पोरेट बैंकिंग की नौकरी छोड़कर वे 2011 में अपने गांव लौटे और पुश्तैनी जमीन पर खेती को एक लाभदायक व्यवसाय के रूप में विकसित करने की कोशिश शुरू की। आज उनका यह प्रयोग अकेले एक खेत तक सीमित नहीं है। वे देश के छह राज्यों में दो लाख से अधिक किसानों को कृषि में नई संभावनाओं से जोड़ने का काम कर रहे हैं।

औरंगाबाद के बरौली गांव में 20 एकड़ जमीन से शुरू हुई अभिषेक की यात्रा परंपरागत खेती से अलग थी। उन्होंने सबसे पहले मिट्टी की जांच, पॉलीहाउस तकनीक और सूक्ष्म पोषक तत्वों के इस्तेमाल पर ध्यान दिया। इसके बाद उन्होंने तुलसी, लेमनग्रास, हल्दी और मोरिंगा (सहजन) जैसी सुगंधित एवं औषधीय फसलों को खेती का हिस्सा बनाया। कम पानी में तैयार होने वाली और अपेक्षाकृत विपरीत मौसम में भी टिक सकने वाली फसलों ने उनके प्रयोग को अलग पहचान दी।

उनकी एक महत्वपूर्ण उपलब्धि बिहार में टिशू कल्चर तकनीक से जरबेरा की व्यावसायिक खेती का प्रयोग रहा। इससे राज्य में आधुनिक पुष्पकृषि की संभावनाओं को बल मिला। खेती के पहले ही वर्ष बागवानी से करीब छह लाख रुपये की आय ने यह भरोसा मजबूत किया कि वैज्ञानिक तकनीक, फसल विविधीकरण और बाजार की समझ के साथ खेती को आर्थिक रूप से आकर्षक बनाया जा सकता है।

लेकिन अभिषेक की असली उपलब्धि उनके अपने खेत की सफलता नहीं, बल्कि उस अनुभव को दूसरे किसानों तक पहुंचाना है। आज वे

बिहार, झारखंड, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र और कर्नाटक में दो लाख से अधिक किसानों का मार्गदर्शन कर रहे हैं। 95 से अधिक किसान उत्पादक संगठनों (एफपीओ) के साथ काम करते हुए वे छोटे और सीमांत किसानों को बाजार से जोड़ने, बिचौलियों पर निर्भरता घटाने और अधिक लाभ देने वाली फसलों की ओर बढ़ने में मदद कर रहे हैं।

बरौली में सौर ड्रायर के जरिए तैयार की जाने वाली उनकी 'टीटर ग्रीन टी' भी इसी सोच का उदाहरण है। तुलसी, सहजन और लेमनग्रास से तैयार इस उत्पाद से जुड़कर औरंगाबाद कादंबिनी किसान उत्पादक कंपनी के करीब 500 किसान चाय की खेती और प्रसंस्करण से नियमित आय अर्जित कर रहे हैं।

कृषि–तकनीक स्टार्टअप किसानप्रो में व्यवसाय विकास प्रमुख के रूप में अभिषेक करीब 40,000 किसानों को मौसम की वास्तविक समय की जानकारी, टिकाऊ कृषि तकनीकों और राष्ट्रीय–अंतरराष्ट्रीय बाजारों से जोड़ने की दिशा में भी काम कर रहे हैं।

उनकी कहानी यह बताती है कि कृषि का भविष्य केवल अधिक उत्पादन में नहीं, बल्कि बेहतर फसल, बेहतर तकनीक, बेहतर बाजार और बेहतर संगठन में छिपा है। अभिषेक कुमार का सफर यह भी साबित करता है कि अगर खेती को ज्ञान, नवाचार और उद्यमिता से जोड़ा जाए तो वह न केवल किसान की आय बढ़ा सकती है, बल्कि गांव में सम्मानजनक और टिकाऊ आजीविका के नए रास्ते भी खोल सकती है।

RNI No.-BIHHIN/2003/12538 Postal Reg:R-10/NP-39/Patna GPO/26-28

असम के बाढ़ प्रभावित शिवसागर, चराईदेव और जोरहाट जिले के 378 गाँवों में 1,912 स्वयंसेवको ने 40,168 परिवारोंतक पहुंचाईसहायता।

डाक टिकट

पता